शोध-चिंतन पत्रिका : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई शोध पत्रिका
अंक : 1; जूलाई-दिसंबर, 2020; पृष्ठ संख्या : 82-87

अरूपा पटंगीया कलिता विरचित 'मृगनाभि' में चित्रित वैधव्य-विसंगति

पूर्णिमा देवी
एम.ए., एम.फिल.

शोध-सार

पुराने समय से ही स्त्री को समाज में गौण स्थान दिया गया है।उसे हमेशा से प्रताड़ित किया गया है । वर्तमान समय में भी समाज में नारी से जुड़ी अनेक समस्याएँ परिलक्षित होती हैं। समय-समय पर साहित्य की भिन्न-भिन्न विधाओं के माध्यम से इन समस्याओं को उजागर किया गया है । स्त्री समस्याओं में से वैधव्य-समस्या प्रमुख है । समाज में स्त्री की स्थिति अच्छी नहीं है, विधवाओं की स्थिति अधिक दुःखद है । पितृसत्तात्मक भारतीय समाज की इस मानसिकता के खिलाफ साहित्य में बौद्धिक प्रज्ञा के धनी लोग आवाज बुलंद करने के लिए चिंतन-मनन कर रहे हैं । आधुनिक कालखंड में विविध सामाजिक आंदोलन, समाज सेवइयों एवं साहित्यकारों के प्रयासों के कारण विधवाओं की स्थिति में काफी परिवर्तन हो रहे हैं । यद्यपि साहित्य की विविध विधाओं में वैधव्य-जीवन को स्थान मिला है, पर उपन्यास ही वह विधा है, जिसमें इस विषय पर समग्रता से चर्चा हुई है । असमीया साहित्य की विशिष्ट कथाकार अरूपा पटंगीया का उपन्यास 'मृगनाभि' भी वैधव्य-जीवन पर आधारित एक महत्वपूर्ण सामाजिक उपन्यास है । इसमें विधवाओं की अनेक समस्याएँ उनकी व्यथा, यंत्रणा आदि का यथार्थ तथा मार्मिक चित्रण किया गया है । प्रस्तुत शोध-आलेख में हम 'मृगनाभि' उपन्यास में चित्रित विधवाओं की समस्याओं पर चर्चा की गयी है ।

बीज शब्द : *उपन्यास, 'मृगनाभि',वैधव्य-जीवन, सामाजिक-बंधन ।*

प्रस्तावना

भारतीय समाज में सदियों से नारी विभिन्न समस्याओं से जूझती आ रही है । विभिन्न क्षेत्रों में नारी वंचित, पीड़ित और शोषित होती आयी है । प्राचीन काल में नारी बाल-विवाह, यौन-शोषण, बहु पत्नी-विवाह, विधवा-समस्या, सतीदाह-प्रथा, पर्दा-प्रथा, अशिक्षा आदि कई समस्याओं का सामना करती थी।भारत में भी प्राचीन काल में पति की मृत्यु के पश्चात् धर्म के नाम पर स्त्री को पति की चिता पर ही जिंदा जलाने का क्रूर कर्म किया जाता था । पर स्वातंत्र्योत्तर काल में विविध आंदोलनों की बदौलत भारतीय नारी की स्थिति पहले की अपेक्षा काफी सुधर गयी है । आधुनिक काल में नारी मानसिक और आर्थिक दृष्टिकोण से भी स्वावलंबी बन गयी, जिससे अपने अधिकार के लिए आवाज़ उठाने में भी समर्थ हो गयी है । फिर भी नारी जीवन से संबंधित कुछ समस्याओं का समाधान आज भी पूरी तरह से नहीं हुआ है। ऐसी ही एक प्रमुख समस्या है वैधव्य की समस्या । आधुनिक असमीया साहित्य की प्रमुख लेखिका अरूपा पटंगीया कलिता-रचित 'मृगनाभि' उपन्यास में विधवा-विसंगति को उभार कर विधवाओं के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण उपस्थित किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है। असमीया भाषा में 'स' उच्चारणवाले दो वर्ण हैं - 'च' और 'छ' । असमीया भाषा में 'स' के लिए कोमल 'ह' का उच्चारण होता है। असमीया के 'स', 'च' और 'छ' इन तीनों वर्णों के लिए हिंदी लिप्यंतरण में क्रमशः 'स', 'च' और 'छ' रखे गए हैं। हिंदी भाषा के 'य' वर्ण के लिए असमीया भाषा में दो वर्ण चलते हैं- एक का उच्चारण 'य' ही है और दूसरे का उच्चारण 'ज' होता है । असमीया 'य' के लिए हिंदी में भी 'य' रखा गया है, पर असमीया के 'य' के 'ज' वाले उच्चारण के लिए लिपयांतरण में '<u>य</u>' रखा गया है। विविध समाज की संस्कृति से जुड़े शब्दों को इटालिक्स में रखकर उनके अर्थ कोष्ठक में रखे गए हैं।

विश्लेषण

'मृगनाभि' की नायिका सोणतरा युवा विधवा है । सोणतरा पढ़ाई पूरी किए बिना शादी नहीं करना चाहती है। माँ-बाप के समझाने से वह शांतनु चलिहा से शादी करने के लिए तैयार होती है; पर मात्र 27 वर्ष की आयु में ही वह विधवा हो जाती है । लेकिन जब उसे परिवारवालों का साथ चाहिए था, तब उसकी माँ उसे अपने घर में रखने के लिए हिचकिचाती है । उसे लेकर घरवालों के मन में जो दुविधा होती है, जो अशांति होती है, उसे देखकर सोणतरा के आत्मसम्मान पर आघात पहुँचता है और वह सोणमणि को लेकर उस घर को छोड़कर चली जाती है। फिर उसे जीवन निर्वाह के लिए कठोर संघर्ष करना पड़ता है । एक छोटी-सी नौकरी करके, किराए के घर में रहकर संघर्ष करते

हुए वह अपने जीवन में आगे बढ़ती है। हर दिन उसे नई-नई परिस्थितिओं का सामना करना पड़ता है, फिर भी वह जूझती रहती है। अंत में वह आदित्य से पुनर्विवाह करने का फैसला करती है और विधवा-विवाह का मार्ग प्रशस्त करती है। 'मृगनाभि' में यह दिखाया गया है कि किस प्रकार पति शांतनु चलिहा की मृत्यु के उपरांत आस-पास का परिवेश सोणतरा को मानसिक रूप से तोड़ देता है। घर और बाहर- इन दोनों क्षेत्रों में वह उपेक्षा का शिकार होती है। 'मृगनाभि' में सोणतरा को जो वैधव्य-यंत्रणा भुगतनी पड़ी, उसके पीछे निहित कारणों को निम्न बिंदुओं में प्रस्तुत किया गया है।

सामाजिक बंधन

भारतीय समाज में विधवा नैतिकता और सामाजिक परंपराओं की चक्की में सबसे अधिक पीसी जाती है। पति की मृत्यु के तत्पश्चात् सामाजिक कट्टरता और रूढ़ियाँ विधवा नारी के जीवन को सीमित दायरे में बाँध देती है और वह अपना शेष जीवन पीड़ा के साथ बिताने के लिए मजबूर हो जाती है। 'मृगनाभि' में भी सोणतरा को पति की मृत्यु के पश्चात् मृत पति के नाम पर बाकी जीवन समर्पित करने का उपदेश दिया जाता है-

> सती सावित्री है स्वामीर चरण चिंति तेआँ जीयाइ थाकक, भगवंतइ पोनातोक कुशले राखक।(कलिता 2016:27)

(भावार्थ- सती सावित्री बनकर पति के बारे में सोचकर वह जिंदा रहें, भगवान बच्चे को सकुशल रखें।)

भारतीय समाज में व्याप्त इस प्रकार की मानसिकता के कारण विधवा चाह कर भी अपने जीवन को सहज एवं सुखी नहीं बना पाती है। सोणतरा को पति की मृत्यु के दिन ही परोक्ष रूप में यह चेतावनी दी जाती है कि अब उसका जीवन एक परिसर में सीमित है और उस सीमा का अतिक्रमण करने का अधिकार उसे नहीं है।

पारिवारिक बंधन

वैधव्य-विसंगति के लिए किसी न किसी हद तक परिवार के लोग भी जिम्मेदार होते हैं। 'मृगनाभि' की नायिका सोणतरा को भी शांतनु की मृत्यु के बाद परिवार के लोगों से बहुत कुछ सुनना और सहना पड़ता है। चाहे ससुराल के लोग हो या मायके के लोग, हर वक्त सोणतरा पर नज़र रखते हैं। जब उनलोगों को सोणतरा और आदित्य के बारे में पता चला तो एक दिन उसे बुलाकर बड़े जेठ कहते हैं-

> शांतनु मरिलेओ, तुमि निजे चाकरि करिलेओ,
> तुमि शिवसागरर चलिहा परियालर बोवारी।
> एइ बंशत कालिमा सना काम तुमि करिब नोवारा।तोमार सम्पर्के यिखिनि शुनिछो...
> (कलिता2016:46)

(भावार्थ- शांतनु के मरने तथा खुद नौकरी करने पर भी, तुम शिवसागर के चलिहा परिवार

की बहू हो। इस वंश में कालिख लगानेवाला काम तुम नहीं कर सकती। तुम्हारे बारे में जितना सुना है ...)

अपने परिवार वालों से ऐसी बातें सुनकर सोणतरा मानसिक रूप से टूट जाती है। पति के न रहने से किसी अन्य पुरुष से बात करने से उसके परिवारवालों ने उसे इस प्रकार अपमानित किया जैसे उसकी जिंदगी उनलोगों के बनाए हुए नियम-कायदे पर ही चलेगी।

अंधविश्वास

भारतीय समाज में शादी के बाद एक स्त्री को गृहलक्ष्मी माना जाता है। पर पति के गुजर जाने के बाद उससे यह सम्मान भी छीन लिया जाता है। कुछ लोग मांगलिक तथा शुभ कर्मों में विधवा स्त्री की छाया भी नहीं पड़ने देते हैं और इस प्रकार धीरे-धीरे किसी भी सामाजिक कार्यक्रम में उसकी उपस्थिति खत्म होने लगती है। सोणतरा को भी कई बार ऐसे अंधविश्वासों का शिकार होना पड़ा। जब भी वह किसी शुभ अनुष्ठान में कुछ करने के लिए जाती है, उसे यह कहा जाता है कि उसको अब ऐसे कामों से दूर ही रहना चाहिए। क्योंकि विधवा के द्वारा कोई भी शुभ काम नहीं किया जाता है। जब सोणतरा रुणा को सिंदूर पहनाने के लिए जाती है तब उसको बीच में ही टोक दिया जाता है-

> खोपा बांधि, रुणार कपालत रङा चंदनर रेघा दि कपालत संदूरर फौँटतो दिबखोजोते रुणार बरमाके मोर हातर परा संदूरर टेमाटो नि निजर बुढ़ा आङुलिरे ताइर कपालत मइ सयुत्ने आँकि दिया रेघार माजत दि दिछिल। बरमाके पिक अलप पेलाइ कैछिल- 'सेंदूर नथका मानुहे सेंदूर पिंधाब नापाय।
>
> (कलिता2016:31)

(भावार्थ- जुड़ा बाँधकर, रुणा के माथे पर चंदन का दायरा बनाकर सिंदूर की बिंदी लगाते समय ही रुणा की बड़ी माँ ने मेरे हाथों से सिंदूर का डिब्बा लेकर खुद अपने अंगूठे से उसके माथे पर मेरे बनाए हुए दायरे के बीच दे दिया। उसकी बड़ी माँ ने पान थूक कर कहा- जिसके माथे पर सिंदूर नहीं है, उसे सिंदूर लगाना नहीं चाहिए।)

यहाँ तक कि जब उसके भाई सोणटि नौकरी के इंटरव्यू देने के लिए जाता है और वह उसे शुभकामना देने जाती है तब उसकी माँ नहीं चाहती कि शुभकाम में जाने से पहले सोणटि अपनी विधवा बहन को देखें।

रीति-रिवाज

भारतीय समाज में विधवा के लिए कई नियम बनाए जाते हैं; पर पुरुष इन सब से मुक्त है। विधवाओं को कुछ जगहों में शृंगार तक करने नहीं दिया जाता है। रंगीन कपड़े पहनने का हक भी उससे छीन लिया जाता है। 'मृगनाभि' में भी शांतनु चलिहा की मृत्यु के बाद सोणतरा को रंगीन कपड़े उतार कर सफेद कपड़ा पहनने के लिए दिया जाता है-

बगा कापोरेरे ढाकि रखा तेआँर ओचरत बहि थका पुरोहितजने कैछिल- 'स्त्रीर गात एतियाओ सधबार साज ।' शरत् कालर आबेलिर रदर लगत मिलाइ पिंधा हालधीया शाड़ीखन, हातर, काणर, डिङिर अलंकार कोनोबाइ कोनोबाइ मोर देहर परा आँतराइ निछिल। पेहीये मोर गात दिछिल बगा पारि नोहोवा मेखेला-चादर एयोर । पेहीये मोक तेआँर भरिर शितानत बहुवाइ दिछिल। तेआँर भरीर बुढ़ा आङुलिरे मोर कपालर आरु शिरर रङा रङ मछि दिछिल।

(कलिता2016:25-26)

(भावार्थ- सफेद कपड़े से ढके हुए उनके पास बैठे हुए पुरोहित ने कहा- 'स्त्री के शरीर में अभी भी सधवा के कपड़े ।' शरत् कालीन साझँ के धूप के साथ मिलाकर पहनी हुई साड़ी, हाथ, कान, गले के अलंकार किसी ने मेरे शरीर से हटा दिये । फूफी ने मेरे शरीर पर सफेद साड़ी मेखला-चादर रख दी । फूफी ने मुझे उनके पैरों के पास बिठा दिया। उनके पैर के अंगूठे से मेरे माथे और सिर से लाल रंगपोंछ दिया।)

इस प्रकार देखा जाता है कि एक ओर वह पति की मौत का मातम मना रही थी, वही दूसरी ओर कुछ औरतें उसके शरीर से कपड़े, गहने उतारने में लगी थीं।

रूढ़िवादी मानसिकता

समाज में विधवाओं को लेकर अनेक रूढ़ियों और कुरीतियों का प्रचलन है। कुछ लोगों की रूढ़िवादी मानसिकता विधवाओं को अकेलेपन के अंधकार में ढकेल देती है । 'मृगनाभि' में सोणतरा को भी लोगों की रूढ़िवादी मानसिकता का शिकार होना पड़ता है। आदित्य का सोणतरा के घर में आना-जाना लोगों को अखरता है । आदित्य उसकी सहायता करना चाहता है; पर एक विधवा को इस प्रकार दूसरे पुरुष को घर में आने के अधिकार को लेकर सरे आम दोनों की इज्जत उछाली जाती है-

तेआँक आरु मोक लै नाना कुत्सा रचना हैछिल। कलेजर देवालत, मोर घरलै सोमाइ अहा गछ आरु देवाल बिलाकत, मोर घरर बेरत बिभिन्न पोष्टार परिछिल, किबा-किबि अश्लील कथा लिखा हैछिल।

(कलिता2016:44)

(भावार्थ- उसे और मुझे लेकर अनेक निंदनीय बातें रची गयीं। कॉलेज के दीवारों पर, मेरे घर तक आनेवाले रास्ते के पेड़ और दीवारों पर, कई पोष्टर लगाए गये, कई अश्लील बातें लिखी गईं।)

निष्कर्ष

'मृगनाभि' में विधवा जीवन की दर्दनाक कहानी को स्वर प्रदान किया गया है। पति की मृत्यु होते ही एक विधवा को जैसे सर्वस्व त्यागने के लिए तैयार होना पड़ता है। हिंदू समाज में तो पति से अलग नारी का स्वतंत्र अस्तित्व स्वीकारा ही नहीं गया है। भारतीय समाज में विधवा को हमेशा उपेक्षित ही रहना पड़ता है। इसलिए विधवा होने

के पश्चात् सोणतरा को समाज और परिवार के शोषण की चक्की में पीसकर घुट-घुट कर जीना पड़ता है । वह घर और बाहर- दोनों स्तरों पर शोषण का सामना करती है, कई उतार-चढ़ावों से जीवन व्यतीत करती है । विधवा की स्थिति में सुधार लाने के लिए समस्त समाज में परिवर्तन लाना अपेक्षित है । आज ऐसी स्त्री को परंपरागत बंधनों के घेरे से बाहर निकालकर समाज के एक अंग के रूप में सम्मान के साथ जीने देना जरूरी है। लिंग-भेद को आधार बनाकर स्त्री और पुरुष में भेद-भाव नहीं करना चाहिए । अगर समाज में विधवाओं के प्रति निहित नकारात्मक दृष्टिकोण को सकारात्मक बनाया जा सकता है। तभी तो नारी के साथ-साथ समाज का सर्वांगीण विकास होता, यह उम्मीद की जा सकती है।

ग्रंथ-सूची:

कलिता, अरूपा पटंगीया. मृगनाभि. दूसरा, गुवाहाटीः चंद्र प्रकाश, 2016.

देशपाण्डे, वैशाली. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार. कानपुरः विकास प्रकाशन, 2007.

संपर्क-सूत्र:

बरपेटा, असम

मोबाइल: 7896680822